रिकार्ड–जाग सजनियां जाग..... ओमशांति प्रातःक्लास 17–7–67

मीठे2 बच्चों ने यह गीत सुना। सब सैंटर्स पर यह गीत है वा नहीं यह तो पता नहीं है। ऐसे2 जो दो/चार गीत हैं वो सबके पास होने चाहिए। या टेप में भरने पड़े। अब यह गीत तो बनाया हुआ कलियुगी मनुष्यों का है। ड्रामा अनुसार टच किया हुआ है, जो फिर बच्चों के काम आता है। ऐसे2 गीत बच्चों को सुनने पर नशा चढ़ता है। बच्चों को तो नशा चढ़ा ही रहना चाहिए कि अभी हम नई राजधानी स्थापन कर रहे हैं। रावण से ले रहे हैं। जैसे कोई लड़ते हैं तो खयाल रहता है ना कि इनकी राजाई हप कर लें। इनका गांव हम अपने हाथ कर लें। अब वो सब तो हद के लिए लड़ते हैं। तुम बच्चों की लड़ाई तो है माया से। जिसका सिवाय तुम ब्राह्मणों के और कोई को पता नहीं है। तुम जानते हो हमको इस विश्व पर गुप्त रीति राज्य स्थापन करना है अथवा बाप से वर्सा लेना है। इसको वास्तव में तो लड़ाई भी नहीं कहेंगे। ड्रामा अनुसार तुम जो सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो सो फिर सतोप्रधान बनना है। तुम अपने जन्मों को नहीं जानते थे। अभी बाप ने समझाया है। और जो भी धर्म स्थापक हैं उनको यह नालेज मिलने की है नहीं। बाप तुम बच्चों को ही बैठ समझाते हैं। (बताया) भी जाता है धर्म ही ताकत है। भारतवासियों को यही पता नहीं है कि हमारा धर्म क्या है। तुमको बाप द्वारा पता पड़ा कि हमारा आदि सनातन देवी देवता धर्म है। बाप आकर फिर तुमको उसी घर में ले जाते हैं। तुम जानते हो हमारा धर्म सुखों के कितने देने वाला है। तुमको कोई से भी लड़ाई आदि नहीं करनी है। तुमको तो अपने ही स्वधर्म में टिकना है और बाप को याद करना है। इसमें भी समय लगता है। ऐसे नहीं कि सिर्फ कहने से स्थित हो जाते हैं। अंदर यह याद रखनी है कि हम आत्मा शांत स्वरूप। हम आत्मा अब तमोप्रधान,पतित बनी हूँ। हम आत्मा पवित्र बनकर हमको फिर वापस घर जाना है। बाप से वर्सा लेने लिए अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है। तुमको नशा चढ़ेगा कि हम तो ईश्वर की संतान हैं। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होते हैं। कितना सहज है। याद से हम पवित्र बन फिर शांतिधाम में चले जावेंगे। दुनियां इन शांतिधाम–सुखधाम को भी नहीं जानती है। बिल्कुल ही ईडियट हो गये हैं। यह है ही आसुरी सम्प्रदाय। यह बातें किसी भी शास्त्र में नहीं है। ज्ञान सागर की है ही एक गीता। जिसमें सिर्फ नाम ही बदल दिया है। सर्व का सदगति दाता ज्ञान का सागर उस परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। और कोई को भी ज्ञानवान कह नहीं सकते हैं। जबकि वो ज्ञान देवे तब तो तुमको ज्ञानवान बनावे। अभी सबकी है बुद्धि भक्तिवान। तुम भी थे। अभी फिर ज्ञानवान नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बनते जा रहे हो। ज्ञान कोई में है ,कोई में नहीं है तो क्या कहेंगे?भक्ति भी छूटी और ज्ञान भी नहीं। अगर ज्ञान हो ज्ञान योग सिखावे। ना है तो क्या कहेंगे?दोनों ही जहानों से गये। उस जहान में उंच पद पा नहीं सकेंगे। बाप सर्विस के लिए कितना उछलते,उछलाते हैं। बच्चों में तो अभी भी तो वो ताकत नहीं आती है जो कि कोई को अच्छी रीति समझावें। ऐसी2 युक्तियों रचें। भल बच्चे मेहनत कर .....
.....गोपों में ही कुछ ताकत है। फीमेल्स में इतनी ताकत नहीं है जो राय निकालें। गोप तो फिर भी पढ़े–लिखे,पोजीशन वाले हैं। जिसने प्रोग्राम बनाया है जोड़ा ही पढ़ा–लिखा है। डबल का फोर्स हो गया है। ऐसे2 डबल फोर्स वाला युगल कोई अपने इस ब्राह्मण कुल में दूसरा है नहीं। ब्राह्मण मुठ भर हैं ;परंतु उनमें भी ऐसा युगल एक ही है जो कि गोपों को उठा रहा है। उनको खयालात रहता है कि संगठन हो जिसमें युक्तियां निकालें कि सर्विस वृद्धि को कैसे पावे। माथा मार रहे हैं। फीमेल्स में दम नहीं है। नाम भी भल शक्तिसेना है ;परंतु पढ़ी–लिखी हुई नहीं हैं। अगर थोड़ी भी पढ़ी–लिखी हैं भी तो झट देहअभिमान आ जाता है। बाबा ने यह भी समझाया है कि क्रिमिनल आई बहुत नुकसान करती है। यह बीमारी बहुत .....इसलिए ही उछलते नहीं हैं। इसलिए ही बाबा पूछते भी हैं कि युगल .....ठीक चल रहे हैं?

डस तरफ कितनी बड़ी2 सेनायें हैं। स्त्रियों को भी झुण्ड है। पढ़ी–लिखी हुई हैं। उनको मदद भी बहुत मिलती है। तुम तो गुप्त हो। कोई भी नहीं जानते हैं कि यह ब्रह्माकुमारीज क्या करती रहती हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। गृहस्थ व्यवहार का बोझा सिर पर रहने से झुके हुये हो। ब्रह्मा कुमार कुमारियां तो कहलाते हो ;परंतु वो क्रिमिनल आई ठंडी नहीं होती है। दोनों पहिये एक जैसे हों वो बहुत मुश्किल है। अब देहली में संगठन करते हैं। बाबा भी समझाते रहते हैं फिर सर्विस को उठाने लिए बड़े2 म्यूजियम खोलो स्थाई। कोई धनवान है भी तो भी उछलते नहीं हैं। धन के भूखे हैं। बच्चा नहीं होता है तो भी गोद में ले लेते हैं। उछल नहीं आती है कि बाबा हम बैठे हैं मैं बड़ा मकान (लेकर) देता हूँ। बाबा की नजर देहली पर है ;क्योंकि देहली है कैपिटल। बड़ों की बैठक को कैपिटल कहा जाता है। कैपिटल को जीता तो राजधानी ही सारी ....जीत लेंगे। चढ़ाई भी कैपिटल पर ही करते हैं। देहली है हेड ऑफिस। बाबा कहते हैं कि देहली पर चढ़ाई करो। बहुत अच्छा म्यूजियम बनाओ। बाबा तो स्थान आदि देखते नहीं हैं। तुम बच्चे ही आते–जाते रहते हो। कोई अच्छे को समझाने लिए अंदर घुसना चाहिए ना। गाया हुआ भी है कि पांडवों को कौरवों से तीन पैर पृथ्वी के भी नहीं मिलते थे। यह कौरव अक्षर तो गीता का है ना। भगवान ने आकर राजयोग सिखाया। फिर उसका नाम गीता रखा है ;परंतु गीता के भगवान का नाम झूठा रख दिया है। इसीलिए बाबा बार2 कहते रहते हैं। मुख्य इसी प्वाइंट को उठाना है। आगे बाबा कहते थे कि बनारस की विद्वत मण्डली में घुसो। वहां भी जीत पा नहीं सके। बाबा युक्तियां तो बहुत बताते रहते हैं। फिर अच्छी रीति कोशिश करनी है। पहले2 तो कैपिटल में अच्छा फर्स्टक्लास सेंटर हो। जयपुर में मकान मिल गया तो सजा लिया है;परंतु यह तो किनारा है। होना चाहिए देहली में। भल देहली के ब्राह्मणकुलभूषणों में इतने धनवान नहीं है और तरफ तो हैं ना। बाप बार2 समझाते रहते हैं कि ऐसे2 बच्चे भी बाबा के हाथ में हैं। नम्बरवन देहली में ही युक्ति रचो। संगठन में भी मूल बात यही हो कि बड़ा सेंटर देहली में कैसे खोलें? वो लोग तो देहली में बहुत ही भूख हड़ताल आदि करते हैं। तुम तो ऐसा कोई नहीं करते हो। लड़ना आदि कुछ भी नहीं करते हो। तुम तो सिर्फ सोये हुये को जगाते हो। देहली वालों को ही मेहनत करनी है कोई और प्लाट ले लो। तुम जो जानते हो हम ब्रह्माण्ड के भी मालिक सो (फिर) कल्प पहले की तरह सृष्टि के भी मालिक बनेंगे। यह पक्का है कि जरूर विश्व का मालिक बनना ही है। अब तुमको तीन पैर पृथ्वी के भी कैपिटल में भी चाहिए। जो कि वहां पर ज्ञान के बड़े2 गोले और तोपें छोड़ो। नशा चाहिए ना ; परंतु ऐसी तो कोशिश ही नहीं करते हैं। नशा आता नहीं है। माया ऐसी है जो एक/दो में ही प्यार में नहीं आते हैं। ए कहीं अच्छा,पढ़ा–लिखा है और है भी पढ़े–लिखे धनवान तो फिर दम नहीं है। झुके हुये हैं। धन के मोह में ,बच्चों के मोह में। थोड2 पुरुष हैं सो भी नौकरी आदि में ही फंसे रहते हैं। बड़ों का आवाज चाहिए ना। इस समय भारत सारा ही गरीब है। गरीबों की सेवा करने लिए है। बाप आते हैं। देहली में तो भल लाख,डेढ़ का खर्चा होना चाहिए। बहुत अच्छा सेंटर होना चाहिए। बच्चे बहुत ही गुप्त हैं जो कहते हैं कि मैं देने लिए तैयार हूँ। फिर बाबा लेकर क्या करेंगे?बाबा इशारा देते रहते हैं। देहली वाले समझते ही हैं कि बाबा ध्यान खिंचवाते हैं। आपस में खीरखंड होकर मिलकर अच्छे2 वकील आदि को हाथ में करो। वो जमीन नहीं तो दूसरी जमीन हाथ करो। अपने पांडवों का किला तो बनावे ही ना। देहली में ही बनना होगा ;परंतु बच्चे इतनी दूरंदेश बुद्धि नहीं रखते हैं। इसमें तो दिमाग बहुत अच्छा चाहिए। बहुत तो कुछ कर भी सकते हैं ;परंतु दिमाग ठंडा है। वो लोग .....तो बहुत हैं कि भारत हमारा देश है। हम ऐसे2 करेंगे ;परंतु खुद में दम कुछ भी नहीं है। बिना मदद के उठ नहीं सकते हैं। तुमको तो बहुत मदद मिल रही है बेहद के बाप से। इतनी मदद कोई दे नहीं सकते हैं। .....

मेल ठीक है वा नहीं। जहां मेल नही ंतो वहां पर हार है। तुम बच्चों को बाप विश्व की बादशाही देते हैं तो हौसला बहुत चाहिए। निंदा ,चुगली में ही बहुतों की बुद्धि अटकी रहती है। बंधनों की आफत है माताओं पर। मेल्स पर तो कोई बंधन नहीं है। माताओं को ही अबला कहा जाता है। पुरुष बलवान होते हैं। पुरुष शादी करते हैं तो उनको बल दिया जाता है। तुम्हीं गुरू,ईश्वर सब कुछ हो। स्त्री तो जैसे कि पूंछ है पिछाड़ी में लटकने वाली। तो सचमुच पूंछ होकर ही लटक मरती है। पति में मोह ,बच्चों में मोह। जैसे हूबहू बंदरों में होता है ना। पुरुषों का इतना मोह नहीं रहता है। उनकी तो एक जुत्ती गई तो फिर दूसरी,तीसरी ले लेते हैं। आदत ही पड़ गई है। अब तो देखो शंकराचार्य जैसे भी कहते हैं कि बहुत शादियां करके बहुत बच्चे पैदा करने चाहिए। क्या बकते रहते हैं। आवाज तो कोई करते ही नहीं हैं। ब्रह्मा कुमार कुमारियां में भी ताकत नहीं है जो कि उनको लिखें कि तुम सन्यासी होकर यह क्या कह रहे हो। सब जैसे कि सोये हुये हैं। ताकत ही नहीं है। कोई2 अखबार वाले मानते भी हैं तो उनके पास जाते नहीं हैं। बाबा तो समझाते रहते हैं कि यह2 अखबार में डालो। गीता बिल्कुल खण्डन की हुई है। इस कारण ही भारत गरीब बना है। फिर बाप आकर सच्ची गीता सुनाकर राजयोग सिखा रहे हैं। बाबा कहते हैं बहुत ;परंतु उत्तर ही नहीं आता है कि बाबा हम यह युक्ति रच रहे हैं। दिल पसंद कोई समाचार नहीं आता है। बाबा तो कोई से बात नहीं करेंगे ;क्योंकि उनमें तो शिवबाबा की पधरामणी है। कोई उल्टा—सुल्टा बोलकर डिसरिगार्ड कर दे;क्योंकि वो लोग तो अपने ही नशे में रहते हैं ना। उनको क्या पता कि यह कौन है। इनकी बाहर में सर्विस हो नहीं सकती है। इसलिए ही बाबा ने कहीं पर जाना ही बंद कर दिया है। बच्चों को बाप का शो करना है। यह समझाना तुम्हारा काम है। बाप के साथ यह पूंछ भी तो लटकी हुई है। तो यह भी जा नहीं सकते हैं। कहेंगे शिवबाबा यह बताओ। यह2 हमारे पर आफत है। इसमें आप राय दो। ऐसे2 बातें पूछते हैं। बाबा तो आये ही हैं पतितों को पावन बनाने। बाप कहते हैं तुम बच्चों को सब नालेज मिलती है। कोशिश कर आपस में मिलकर बड़ा सेंटर खोलो। चिउंटी मार्ग की सर्विस तो चल ही रही है। अब विहंग मार्ग का तमाशा दिखाओ तो बहुतों का कल्याण हो। बाबा ने कल्प पहले भी समझाया था सो ही अब भी समझाते हैं। बहुतों की बुद्धि कहां ना कहां पर फंसी पड़ी है। उमंग नहीं है। बहुतों का आपस में प्यार बहुत कम है। झट देहअभिमान में आ जाते है। देहअभिमान तो बहुत खोटा है। उसने ही सत्यानाश की है। अब बाप सत्या उंची करने कितनी सहज बात बताते हैं। बाप को याद करो तो शक्ति आवे। नहीं तो शक्ति आती नहीं है। भल सेंटर्स सम्भालते हैं ;परंतु नशा नहीं चढ़ता है ;क्योंकि ....देहअभिमान है। देहीअभिमानी बने तो नशा भी चढ़े हम किस बाप के बच्चे हैं। बाप कहते हैं कि जितना2 तुम देहीअभिमानी होंगे उतना ही बाप का बल आवेगा। आधा कल्प का देहअभिमान का नशा है। ऐसे नहीं कि बाबा ज्ञान का सागर है। हमने भी ज्ञान उठाया है। बहुतों को समझाते भी हैं ;परंतु याद का (जौहर) भी चाहिए ना। ज्ञान की तलवार है। याद की फिर यात्रा है। दोनों ही अलग2 चीज है। ज्ञान में याद की यात्रा का जौहर चाहिए। वो नहीं है तो जैसे कि काठ की तलवार हो जाती है। सिक्ख लोग तलवार का कितना मान रखते हैं। वो तो हिंसक थे। जिससे ही लड़ाई की। वास्तव में कायदेसिर उनको गुरू तो कह नहीं सकते हैं। गुरू लोग लड़ाई थोड़े ही करते हैं। गुरू तो अहिंसक चाहिए ना। लड़ाई से थोड़े ही सदगति होती है। दुनियां में क्या2 होता रहता है। विलायत से भी तलवार मंगवाकर परिक्रमा देते रहते हैं। जलसा मनाते हैं। तुम्हारी तो यह योग की बात है। याद के बल बिना तलवार काम में नहीं आवेगी। क्रिमिनल आई कब सुधरेगी नहीं। यह बहुत नुकसान करने वाली है। मूल बात है याद की। लिखते हैं कि बाबा बहुत मेहनत है। बाबा कहते हैं कि पुरुषार्थ करो तो तलवार में भी जौहर आवे। अंदर में धारणा करनी है। आत्मा कानों से सुनती

है ना। बाप कहते हैं कि तुम याद में मस्त रहो तो सर्विस करते जावेंगे। कब2 कहते हैं बाबा सुनते नहीं हैं। बाबा कहते हैं याद की यात्रा में कच्चे हो। इसलिए ही ज्ञान तलवार काम नहीं करती है। याद की मेहनत करो। यह है गुप्त मेहनत। मुरली चलाना तो प्रत्यक्ष है। याद की ही गुप्त मेहनत है जिससे ही शक्ति मिलती है। ज्ञान से शक्ति नहीं मिलती है। तुम पतित से पावन याद के बल से बनते हो। कमाई का पुरुषार्थ करना है। कहते हैं कब2 बहुत खुशी रहती है, कब पता नहीं क्या होता है। याद में नहीं रहने कारण ही एकरस अवस्था नहीं रहती है। फिर किस्म2 के घुटके आते हैं। स्टुडेंट्स को टीचर याद नहीं पड़ता होगा?यहां तो घर में रहते हुये भी सब कुछ करते हुये टीचर को याद करना है। इस टीचर से तो बहुत2 उंच पद मिलता है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। टीचर की याद रहे तो भी बाप और गुरू याद जरूर आवेंगे। कितने प्रकार से समझाते रहते हैं ;परंतु घर में भी धन—दौलत ,बाल—बच्चे आदि को देखकर भूल जाते हैं। समझाते तो बहुत हैं। तुमको रुहानी सर्विस करनी है। बाप की याद ही है उंच ते उंच सेवा। मनसा,वाचा,कर्मणा बुद्धि में याद बाप की। मुख से भी ज्ञान की ही बातें सुनाओ। किसी को भी दुःख नहीं देना है। कोई अकर्तव्य नहीं करना है। पहली बात अल्फ नहीं समझने से और कुछ भी नहीं समझेंगे। पहले2 अल्फ पक्का करवाना चाहिए तब तक आगे नहीं बढ़ना चाहिए। सबसे ही वंडरफुल बात है गीता की ही बात को सिद्ध करना। शिवबाबा राजयोग सिखाकर विश्व का मालिक बनाते हैं। झूठी गीता सुनने कारण कंगाल बन गये हैं। इस छी2 दुनियां में माया का शो बहुत है। कितना फैशन हो गया है। छी2 दुनियां से तो नफरत आनी चाहिए। एक बाप को याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और पवित्र बन जावेंगे। टाइम वेस्ट नहीं करो। अच्छी रीति धारणा करो। माया दुश्मन बहुत का अकल चट कर देती है। कमाण्डर गफलत करते हैं तो उनको डिसमिस भी कर देते हैं। खुद कमांडर को भी लज्जा आ जाती है। फिर रिजाइन भी कर लेते हैं। यहां पर भी ऐसे ही होता है। अच्छे2 कमांडर्स कब फां हो जाते हैं। ओम।

<u>रही हुई प्वाइंट्स</u>—धर्मों में मुख्य पहले2 देवी धर्म है। फिर सबकी वृद्धि होती है। झाड़ बढ़ता है। अनेक—अनेक धम ,अनेक मत हो जाते हैं। यही एक धर्म श्रीमत से स्थापन होता है। द्वैत की बात नहीं। यह रुहानी नालेज रुहानी बाप ही बैठ सुनाते हैं। तुम तो प्रैक्टिकली अनुभव कर रहे हो। जानते हो कि बाप हमको पढ़ाते हैं। उंच ते उंच पद जिससे ही पाते हैं। हमको तो बहुत इन्कम होती है। यही शुद्ध अहंकार रखना है कि हमको तो भगवान पढ़ाते हैं। और फिर बाकी तो क्या ही चाहिए। जबकि हम विश्व का मालिक बनते हैं तो खुशी क्यों नहीं रहती है?या तो निश्चय में कहीं पर संशय है। बाप में संशय कहीं पर भी लाना नहीं चाहिए। माया संशय में लाकर भुला देती है। बाबा ने समझाया कि आंखें बहुत धोखा देने वाली हैं। अच्छी चीज होगी तो दिल बित—बित करेंगे कि खावें। आंखों से ही देखते हैं तो क्रोध भी आता है मारने लिए। देखेंगे ही नहीं तो मारेंगे कैसे? आंखें उसे ही देखती हैं तभी लोभ ,मोह भी आता है। मुख्य धोखा देने वाली तो आंखें ही हैं। इन पर पूरी नजर रखनी चाहिए। आत्मा को ज्ञान मिलता है तो फिर क्रिमिनलपना छूट जाता है। ऐसे भी नहीं कि आंखों को निकाल ही देना है। हो सकता है कि (ऐसे) भी कोई मस्त हो जावे। तुम्हारी एक बात में विजय हो तो फिर विहंग मार्ग की सर्विस हो जावेगी। अखबारों में भी तुम डाल सकते हो कि गीता का खंडन होने कारण ही भारत की इतनी बुरी हालत हो गई है लेकिन तुम नई दुनियां में जा रहे हो तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। ओम।

डायरैक्शन— बाप के द्वारा दिये गये— देहली में जो संगठन 12तारीख से 15 अगस्त तक हो रहा है और जिनको निमंत्रण .....गया है वो अगर और कोई का नाम राय देने लिए लिखेंगे वा खुद भी अपनी राय लिखेंगे कि मैं अच्छी2 राय दे सकता हूँ तो अपन नाम मधुबन में बाप—दादा पास भेज सकते हैं। फिर बाबा संगठन में आने लिए निमंत्रण भेज देंगे जी। बच्चों से अब विदाई